" दस रूपए " - सच की कसौटी पर...

-पवन कुमार पाण्डेय

बात सिर्फ़ दस रूपए की ही नहीं थी;
बात तो मेरे आन-बान-मान और सम्मान की थी।
पूरे गांव में मैं पूरी तरह से बदनाम हो चुका था;
'अम्मा-बाबू' का नामी 'लाल' पूर्णतः बिखर चुका था।।1।।

गांव के सारे लोग मुझे 'चोर' मानने लगे थे;
लोगों के घर से मुझे बुलावे भी कम आने लगे थे।
'दस रूपए में दस गोली' का खिताब मुझे मिल चुका था;
बाहर निकलना और जीना भी लगभग दूभर हो गया था।।2।।

इन सबकी परवाह से भी मैं बिल्कुल बेपरवाह था;
पर; हताश-निराश मां का दुःख मुझे अंदर तक झकझोर देता था।
'मेरी अम्मा' ने भी मुझसे बातचीत करना लगभग बंद सा कर दिया था;
और यही मेरे भी दुःख का सबसे बड़ा कारण था।।3।।

एक रात जाकर मैं अपनी 'अम्मा' से चिपक गया-लिपट गया;
'अम्मा! क्या तुम भी मुझे चोर मानती हो'; कहते ही बिफर पड़ा।
'दिल से तो नहीं "लाल", पर; दस रूपए तो गायब हुए हैं;
बात रूपए की भी नहीं है; मेरे विश्वास ठगे गए हैं'।।4।।

बलवान समय चलता रहा अपनी चाल; जो बड़ी ही दर्दनाक थी,
मगर; मेरे घर की और मेरे मन की शान्ति बिल्कुल भंग हो गई थी।

अचानक; एक रात 'मेरी अम्मा' ने आकर 'मेरी बड़की बच्ची' को बताया;
'दस रूपए "मेरे लाल" ने नहीं, दुष्ट चूहे ने था कोने में छिपाया'।।5।।

बहुत ही रोई थीं 'मेरी अम्मा' उस रात मुझसे लिपटकर;
और मैं भी उनकी अमृतमयी आंसुओं में पूरी तरह भीग चुका था।
मेरे सारे पाप और सारे पश्चाताप उस पवित्र गंगा ने धुल दिए थे;
जिसे क्रूर काल ने कभी मेरे दामन में उड़ेल दिए थे।।6।।

अब पूरे गांव का मैं फिर से 'हीरो' था और अपनी 'अम्मा का दुलारा';
भैया की त्रास ने 'पवन' से जिसकी जबरन सहमति दिलाई थी; उससे हो गया था बिल्कुल ही मेरा किनारा।
चार दशक से भी ज्यादा हो गए इस बात को; इस राज को;
याद आने पर याद आती है; 'अपनी अम्मा' की ये बात-"कभी छोड़ना नहीं सच को"...
हे अम्मा!! तुझे शत-शत नमन, सादर नमन।।7।।

पवन कुमार पाण्डेय
एम. ए. (साहित्य), एम. ए. (लोक प्रशासन) & एम. ए. (ज्योतिष),
पूर्व प्रबंधक (DSIIDC, दिल्ली सरकार),
पूर्व अनुभाग अधिकारी (इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली सरकार); एवम्
अनुभाग अधिकारी
श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली